© 2018 IJSRST | Volume 4 | Issue 7 | Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X
International Journal of Scientific Research in Science and Technology

पर्यटन और विकास की सम्भावनाएँः पं0 चम्पारण जिले के संबंध में

विवेक कुमार मिश्रा
शोध–छात्र
भूगोल–विभाग, बी.आर.ए.
बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर

परिचयः– पर्यटन एक स्वछन्द मानव क्रिया है। यह मानव की जन्मजात एवं आधारभूत प्रवृति है। इसी कारण मानव प्राचीन काल से लेकर वर्तमान समय में भी पर्यटन करता रहा है। वर्तमान समय में पर्यटन एक उद्योग के रूप में तीव्र गति से विकास कर रहा है।

पर्यटन शब्द संस्कृत के 'अटन' प्रत्यय से बना है। 'अटन' का अर्थ 'भ्रमण' होता हैं। 'अटन' को जोड़कर संस्कृत में तीन शब्द बनाये गए हैं– (1) तीर्थाटन (तीर्थ+अटन) अर्थात् तीर्थ क्षेत्रों का भ्रमण, (2) देशाटन (देश+अटन) अर्थात् देश–विदेश में घूमना तथा (3) पर्यटन (पय+अटव) अर्थात् आनन्द एवं ज्ञान के लिए घूमना। कहने का तात्पर्य यह है कि ''कुछ समय के लिए अपने स्थायी स्थान को छोड़कर दूसरे स्थान पर जाना अर्थात् पर्यटन का तात्पर्य मनोरंजन, ज्ञान, धर्म, संस्कृति इत्यादि को जानने के उद्देश्यों से किया जाता है। व्यक्ति अकेला या समूह में इस प्रकार की यात्राएँ करता हैं उसे पर्यटन कहते हैं। **अध्ययन क्षेत्रः–** बिहार राज्य के पश्चिमोत्तर भाग में हिमालय की तराई में स्थित प0 चम्पारण जिला का निर्माण 1972 ई0 में किया गया। प्रारम्भ में यह संयुक्त रूप से पू0 चम्पारण जिला के साथ चम्पारण जिला के रूप में था। इसका क्षेत्रफल 5228 वर्ग किमी है। 2011 की जनगणना के अनुसार यहाँ की कुल जनसंख्या 3922780 व्यक्ति हैं तथा जनसंख्या का घनत्व 25 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी हैं। प0 चम्पारण जिले की कुल साक्षरता दर 58.6 प्रतिशत है तथा 90 प्रतिशत लोग ग्रामीण तथा 10 प्रतिशत लोग नगरों में निवास करते हैं। बेतियानगर यहाँ का जिला मुख्यालय है तथा अन्य प्रमुख नगरों में चनपटिया, नरकटियागंज, हरिनगर एवं बगहा है। प0 चम्पारण क्षेत्रफल की दृष्टि से बिहार का सबसे बड़ा जिला हैं।

उद्देश्यः– इस शोध कार्य के निम्नलिखित उद्देश्य हैः

1- प0 चम्पारण जिला में स्थित पर्यटक स्थलों का विकास एवं जनसाधारण वर्ग का ध्यान आकर्षित करना।
2- पर्यटन उद्योग को बढ़ावा देकर बेरोजगार युवकों को रोजगार के अवसर प्रदान करने के लिए सुझाव प्रदान करना।
3- प0 चम्पारण जिला में पर्यटन उद्योग को चिन्हित कर राष्ट्रीय एव अंतराष्ट्रीय स्तर पर पहचान प्रदान करना।
4- प0 चम्पारण जिला में पर्यटन उद्योग की समस्याओं का अध्ययन एवं समस्याओं का समाधान हेतु उपाय प्रदान करना।

अवधारणाः– प0 चम्पारण जिला ऐतिहासिक वैदिक काल से ही मानव निवासित रहा है। इस कारण यह विविध सांस्कृतिक, ऐतिहासिक एवं भौगोलिक विरासतों से समृद्ध है। यहाँ सैकड़ों प्राचीन स्मारक स्थित हैं। वाल्मीकि की तपोभूमि, जगत जननी सीता की आश्रय भूमि, लवकुश की जन्मभूमि, बौद्धभिच्छुओं की ढौर भूमि एवं गांधी जी की कर्मभूमि से विख्यात हैं। यह प्राचीनकाल, मध्यकाल एवं आधुनिककालीन पर्यटक स्थलों की उपस्थिति साथ ही अपनी भौगोलिक स्थिति के कारण,

सांस्कृतिक विविधता इत्यादि ने पर्यटकों को आकर्षित किया है। दिनोदिन पर्यटकों की बढ़ती संख्या एवं आकर्षण ने इस जिले में पर्यटन की तमाम सम्भावनाओं को जागृत किया है। इसलिए पर्यटन स्थलों एवं पर्यटकों से संबंधित समस्याओं का अध्ययन करना भी इस शोध पत्र का उद्देश्य हैं। प0 चम्पारण जिला के प्रमुख पर्यटक स्थलः निम्नलिखित हैः–

1- **लौरिया अशोक स्तम्भः–** मगध साम्राज्य के सम्राट अशोक द्वारा 241–42 इ0पू0 निर्मित करवाया गया अशोक स्तम्भ 32–34 फीट ऊँचा, आहार वयास 3 फीट एवं शीर्ष व्यास 2 फीट है। इसके शीर्ष भाग के गोल चौकी पर पूर्व की ओर मुँह करके बैठे हुए सिंह की मूर्ति है। चूना पत्थर से निर्मित मोर छवियुक्त बेमिशाल पॉलिस, चमक सहित पालि भाषा की ब्राह्मणी लिपि में राजाज्ञा अंकित है। यह स्तम्भ लौरिया रामनगर मुख्य मार्ग पर स्थित है जो एन0एच0 28 बी से 200 मी0 की दूरी पर उत्तर में स्थित है।

2- **रामपुरवा अशोक स्तम्भः–** नरकटियागंज जंकसन से 16 किमी उत्तर हडबोडा नदी के पूर्वी किनारे पर रमपुरवा में अशोक स्तम्भ स्थित है। यहाँ दो स्तम्भ गिरे हुए अवस्था में है। एक स्तम्भ के शीर्ष पर वृषभ की मूर्ति थी जो दिल्ली में है जबकि दूसरे स्तम्भ पर सिंह की मूर्ति थी जिसे कलकत्ता संग्रहालय में रखा गया है। इसमें एक स्तम्भ खंडित है जिसे जोड़ने के लिए 24'' लम्बे ताँबें के बोल्ट का प्रयोग हुआ है। स्तम्भ में राजाज्ञा अंकित है अंकित शिलालेख को जिसे मौसम से बचाने के लिए दोनों स्तम्भों के उपर एक छोटा छत बनाया गया है।

3- **नन्दनगढ़ः–** यह स्तूप लौरिया प्रखण्ड में छण्भ्ण 28ठ से 2 किमी0 की दूरी पर द0 में स्थित है। माना जाता है कि इस बौद्ध स्तूप का निर्माण नंदवंश के सम्राट घनानंद के शासनकाल में हुआ। जिसका पुननिर्माण सम्राट अशोक द्वारा किया गया। सन् 1933–39 ई0 की खुदाई के दौरान 3.66 मी0 ''अमृत स्तूप'' मिला जिसमें भगवान बुद्ध के शरीर का भस्म 'मगध सम्राट अजातशत्रु ने रखवाया था। यह 82 फीट ऊँचा, 1500 फीट वृताकार है। इस गढ़ की आकृति सीढ़ीनुमा तथा आधार भाग और निचले दो सोपान बहुकोणीय है। वर्तमान में इसके निकट एक संग्रहालय का निर्माण किया गया है।

4- **चानकी गढ़ः–** नरकटियागंज से 3–4 किमी0 पश्चिम हरिनगर रोड से उत्तर में चानकी गढ़ स्थित है। यहाँ 250 फीट लम्बा और 90 फीट ऊँचा ईट निर्मित भग्नावेश है। इस टीले का संबंध चन्द्रगुप्त के महामत्री चाणक्य से माना जाता है।

5- **हेतुकुँअर का गढ़ (सोफा मन्दीर):–** हरिनगर प्रखण्ड के उत्तर में स्थित गौनाहा प्रखण्ड में मगुराँहा के बीच नदी के किनारे एक ऊँचे टीले पर हेतु कुँअर का गढ़ है जिससे एक रहस्यमय सुरंग जुड़ा है। भवन स्थित सुरंग के द्वार पर सात मुँह वाले नाग की प्रतिमा है। यहाँ प्रतिवर्ष जीवित पुत्रिका (जिउतिया) के अवसर परएक बड़ा मेला लगता है।

6- **बावनगढ़ीः–** प0 चम्पारण जिले के बगहा प्रखण्ड से 25 किमी0 दूर पश्चिमोत्तर में बावनगढ़ी स्थित है। यह गढ़ पूर्व में राजापुर सिहोरिया सर्किल बेतिया राज के अधीन था। स्थानीय मान्यताओं के अनुसार यह '52 गढ़ी 53 बाजार' के नाम से मशहूर है। पहले यहाँ राजा सिहोरी की कचहरी तथा पट पर सोंढ़र गढ़ी थी जिससे यह पट के नाम से मशहूर है। यहाँ आज भी प्राचीन राज चिन्ह के रूप में तालाब, गहरे कुएँ और इमारत के खण्ड्हर मौजूद है। प्राचीन काल में यह सिमराव राज्य के राजाओं का राजमहल था।

7- **भितिहरवा आश्रमः–** प0 चम्पारण के प्रमुख ऐतिहासिक स्थलों में विख्यात गौनाहा प्रखण्ड में 'भितिहरवा आश्रम' की स्थापना राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने भितिहरवा ग्राम में किया था। चम्पारण में किसानों पर हो रहे अत्याचारों तथा उद्योग

के लिए किसानों से जबरन नील की खेती पहले पँचकठिया (मानी 1 बीघा जमीन में – 5 कट्ठा नील की खेती) करवायी जाती थी। बाद में तीन कठिया प्रणाली फिर गन्ने की खेती करवाना। साथ ही – खुराकी, बपही, पुतही, कोतवाली घोड़ही, भैंसही इत्यादि 36 प्रकार के करों का जबरन वसूली के विरोध में चम्पारण के किसानों ने गाँधीजी के नेतृत्व में आदोलन किया। चम्पारण में फैली अशिक्षा, गरीबी, अंधविश्वास, शोषण इत्यादि अनेक समस्याओं को दूर करने के लिए भितिहरवा के साथ–साथ अन्य जगहों चनपटिया, अमोलवा, वृदांवन इत्यादि जगहों में कस्तूरबा गाँधी विधालयों की स्थापना की।

8- **वृदांवन आश्रमः–** इस ऐतिहासिक आश्रम की स्थापना गाँधीजी ने 'चम्पारण के गाँधी' नाम से मशहूर प्रजापति मिश्र के सहयोग से किया था। महात्मा गाँधी के विचारों से प्रभावित होकर मिश्र जी ने गँधीजी के बुनियादी शिक्षा प्रणाली के लिए 1936 ई0 में 103बीघा भूमि गाँधीजी को उपलब्ध करवायी तथा 1936 ई0 में वृदांवन में 'ग्राम सेवासंघ' की स्थापना की गई। ग्रामीणों के सहयोग से गाँधीजी ने 51 बुनियादी विधालयों की स्थापना की जहाँ निःशुल्क शिक्षा व्यवस्था की शुरूआत हुई। वर्ष 1939 ई0 में 'ग्राम सेवासंघ' के पाँचवे एवं अंतिम अधिवेशन का आयोजन इस ऐतिहासिक वृदांवन आश्रम में हुआ। इस अधिवेशन में गाँधीजी के साथ भारत के अन्यसत्याग्रही आंदोलनकारी सरदार पटेल, डॉ0 जाकिर हुसैन, विनोवा भावे, खान अब्दुल गफफार खान, डॉ0 श्रीकृष्ण सिंह, काका साहेब कालेलकर इत्यादि गणमान्य व्यक्तियों ने प0 चम्पारण की भूमि को गौरवान्वित किया। इस कारण चम्पारण 'गाँधी जी' की कर्मभूमि के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

9- **वाल्मिकिनगर व्याघ्र परियोजनाः–** बिहार का एकमात्र व्याघ्र परियोजना पं0 चम्पारण जिला में वाल्मिकीनगर अभ्यारण हैं। यह जिला मुख्यालय से लगभग 80 किमी की दूरी पर स्थित उत्तरप्रदेश एवं नेपाल बार्डर पर स्थित है। यह 840 वर्ग किमी क्षेत्र में फैला हैं यहाँ बाघों की सुरक्षा एवं प्रजनन वृद्धि संबंधी कार्य किये जाते हैं इसके अतिरिक्त इस रिजर्व एरिया में हाथी, गेंडा, जंगली भैंसा, तेंदुआ, चीता, अजगर, बन्दर, हिरण चितल, लंगूर, मोर इत्यादि जानवर भी पाये जाते हैं। यहाँ जंगली भैंसों की अधिकता के कारण इस जगह का नाम 'भैंसालोटन' भी है।

प0 चम्पारण जिला में वाल्मीकि व्याघ्र अभ्यारण्य को भ्रमण करने वाले पर्यटकों के लिए जिले के विभिन्न जगहों में 'इकोहर्ट का निर्माण किया गया है।

स्थान	**इको हर्ट की संख्या**
कोतराहा	02
गोर्बधना	04
नौंरगिया दोन	02
मगुँराहा	02

वाल्मीकि व्याघ्र अभ्यारण्य में विगत वर्ष 'इरिस्टइको हर्ट' में आनेवाले पर्यटकों की कुल संख्या एवं प्राप्त आय संबंधी ऑकड़े निम्नलिखित है।

क्र0सं0	वर्ष	पर्यटकों की संख्या	आय
1	2012–13	1921	159150
2	2013–14	1145	113550

3	2014–15	3051	156675
4	2015–16 (मार्च तक)	6175	679250

स्रोतः प0 चम्पारण वन विभाग कार्यालय

10- **वाल्मिकिनगर बहुदेशीय नदी घाटी परियोजनाः–** प0 चम्पारण जिले की प्रमुख नदी गण्डक है इसे 'नारायणी' नाम से भी जाना जाता है। इस नदी को नेपाल में सप्त गण्डकी नाम से पुकारा जाता है। इस नदी पर सन् 4–5 मई 1965 ई0 को भारत के तात्कालिन प्रधानमंत्री प0 जवाहरलाल नेहरू एवं नेपाल के तात्कालिक राजा ने शिलान्यास किया गया। साथ ही जलविधुत परियोजना एवं बिहार में कृषि कार्यों हेतु तीन नहरे क्रमशः त्रिवेणी, तिरहुत एवं दाने नहरों का निर्माण किया गया।

11- **त्रिवेणी घाटः–** प0 चम्पारण जिले के पश्चिमोत्तर भाग वाल्मिकिनगर जंगल जहाँ गण्डक (नारायणी) नदी मैदानी भू–भाग पर आती है। इस नदी का एक भाग नेपाल तथा दूसरा भाग भारत में पड़ता है। यहाँ तीन नदियों क्रमशः गण्डक, सोनवा एवं पंचनद के मिलने से 'त्रिवेणी संगम' का निर्माण होता है। जिस कारण इसे त्रिवेणी घाट भी कहा जाता है। इस पवित्र त्रिवेणी घाट पर प्रतिवर्ष मकर संक्राति के अवसर पर विशाल मेला का आयोजन होता है तथा लाखों श्रद्धालु यहाँ स्नान करते हैं। यहाँ भारत के अलावा तिब्बत, म्यान्मार, नेपाल, भूटान इत्यादि से तीर्थयात्री एवं श्रद्धालु स्नान करने तथा पूजापाठ एवं जलाभिषेक करने आते हैं। यहाँ भगवान शंकर की 800 साल प्राचीन भव्य महाकालेश्वर नाथ मंदिर, जटाशंकर मंदिर, संगम पर स्थित नेपाल में सप्तेश्वर महादेव की 500 साल प्राचीन मंदिर में श्रद्धालु पूजापाठ करते है तथा साथ ही नरदेवी मन्दीर, वाल्मिकि आश्रम, सीताकुटी, लवकुश आश्रम इत्यादि तीर्थ का भ्रमण करते हैं। यहाँ मेले के अवसर पर लोग देशी–विदेशी वस्तुओं, हस्तशिल्प, काष्ठशिल्प, वनोत्पाद इत्यादि का क्रय–विक्रय होने से पर्यटन के साथ–साथ आर्थिक कार्यों को भी बदावाभिलता है। साथ ही यहाँ यह उल्लेखनीय है कि तीन नदियों के संगम स्थल त्रिवेणी केवल नदियों का ही नहीं वरन् भारत नेपाल की सीमा के साथ–साथ बिहार उ0 प्रदेश तथा नेपाल की सीमा का भी संगम स्थल है। (पौराणिक कथाओं के अनुसार यहाँ गज एवं ग्राह्य का युद्ध शुरू हुआ था जिसका अंत वैशाली जिला में कोनहारा घाट (हाजीपुर) में समाप्त हुआ था। इसलिए इस पावन तीर्थ स्थल पर तीर्थपाती एवं श्रद्धालु स्नान दर्शन, पूजा–पाठ करने आते हैं।

प0 चम्पारण जिला के वाल्मीकि नगर स्थिति 'वाल्मीकि विहार' पर्यटक आवास में अप्रैल 2015 से मार्च 2016 तक पर्यटकों के ठहरने का आंकड़ा–

महिना	जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल	मई	जून	जुलाई	अगस्त	सितम्बर	अक्टूबर	नवम्बर	दिसम्बर
पर्यटकों की संख्या	54	52	67	102	91	129	30	17	31	63	50	147
बुंकिग संख्या	7	17	13	30	19	41	13	4	9	22	10	33

स्रोतः (वाल्मीकि विहार पर्यटक आवास कार्यालय– वाल्मीकिनगर)

12- **गोवर्धना सोमेश्वर श्रेणीः–** प0 चम्पारण के उत्तरी भाग में स्थित गोवर्धना सोमेश्वर श्रेणी प0 चम्पारण के 'शीशमुकुट' एवं 'चम्पारण के काश्मीर' नाम से मशहूर है। यह शिवालिक श्रेणी का एक अंग है जो पं0 चम्पारण के प्रमुख भौगोलिक पर्यटक स्थलों में से एक है। हरिनगर रेलवे स्टेशन से 30 किमी दूर उत्तर में स्थित है। रेलवे स्टेशन से सड़क मार्ग द्वारा गोवर्धना तक लगभग 15–16 किमी तक जाया जाता है। इसके बाद जंगली पथरीले रास्तों एवं नदीधाटियों के बीच होते हुए विभिन्न भौगोलिक, धार्मिक, सांस्कृतिक पर्यटक स्थलों जैसे– परेवादह, बतासे–चौरा, अन्हारी बारी, डिस्ट्रिक बोर्ड का डाकबंगला, भर्तृहरि मंदिर, भतृहरि गुफा, शिवमंदिर इत्यादि का भ्रमण एवं दर्शन करते हुए इस श्रेणी की सव्वोच्च चोटी सोमेश्वर पर स्थित 'सोमेश्वरी देवी' (प0 चम्पारण की वैष्णो देवी कहते हैं।) का दर्शन एवं पूजा अर्चना करने जाते हैं। यह स्थल साल में प्रमुखतया रामनवमी के समय पर्यटन एवं भ्रमण हेतु खुलता है। इसलिए प्रतिवर्ष यहाँ घरेलू एवं विदेशी नागरिक दर्शन हेतु आते हैं। इस चोटी की उँचाई समुद्र तल से 875 मी0 (2884 फीट) है। इस कारण यहाँ का सामान्य तापक्रम मैदानी क्षेत्रों से लगभग 10^{0} कम होने से पूर्व से ही ब्रिटिश अधिकारी एवं स्थानीय लोग जलवायु का आनन्द लेने यह आते हैं। **13. भीखना ठोरीः–** प0 चम्पारण में नरकटियागंज जंक्सन से उत्तर में स्थित गौगहा प्रखण्ड में शिवालिग श्रेणी में स्थित नदी घाटी भिखर ठोरी है। ऐतिहासिक अन्यताउसार यह बौद्ध भिक्षुओं का 'ठौर' या 'ठहराव' स्थल था जिस कारण इस जगह का नामकरण भिक्षुठौर पड़ा। ऐसा माना जाता है कि प्राचीनकाल में यह नेपाल, तिब्बत एवं चीन के लिए भारत का गोवे था। प्रथम शताब्दी में सातवी शताब्दी तक अनेक चीनी यात्री जैसे ह्वेनसांग, फाहययान, सुगंयान, इत्यादि भिक्षुठौर दर्रे से ही चम्पारण होते हुए बिहार एवं भारत में प्रवेश किए एवं अपने यात्रा वृतांत में चम्पारण का वर्णन किया। इसे 'चम्पारण का काश्मीर' भी कहते हैं क्योंकि यहाँ मैदानी भाग की अपेक्षा तापमान लगभग 10^{0} कम होता है। यही कारण है कि ब्रिटिश शासनकाल में किंग जॉर्ज भी यहाँ का दौरा किया था तथा इसकी भौगोलिक सुन्दरता, उपलब्ध वन संसाधन एवं शिकार की उपलब्धता से सबका ध्यान आर्कषित किया। किंग जॉर्ज बहुत खुश हुआ इसके फलस्वरूप नरकटियागंज से एक ब्रेंच लाइन उतर की ओर अमोलवा, गौनाहा होते हुए भीखना ठोरी जंगल को आयी है। उसके बाद अनेकों ब्रिटिश शासक जैसे सप्तम एडवर्ड पंचम एवं अष्टम एडवर्ड के अलावा दिसम्बर 1938 में भारत के तात्कालिक वायसराय लिनलिथगो भी यहाँ भ्रमण एवं शिकार के लिए आया।

धार्मिक पर्यटन स्थलः–

(1) मदनपुर शक्ति पीठ, (2) रामनगर का नीलकण्ठ नर्वदेश्वर महादेव मंदिर, (3) पटजिरवा सती स्थल, (4) बगहा की पककी वाउली शिवमंदिर, (5) सहोदरा देवी स्थान, (6) पटजिरवा शक्ति पीठ, (7) कालिका मंदिर इसके अतिरिक्त जिला मुख्यालय बेतिया शहर में स्थित पर्यटक स्थल निम्नलिखित हैं। (1) प्राचीन कालीधाम मंदिर, (2) प्राचीन दुर्गाधाम मंदिर, (3) प्राचीन सागर पोखरा स्थित शिव मंदिर, (4) प्राचीन पीउनीबाग स्थित शिव मंदिर, (5) प्राचीन हरिवाटिका स्थिति शिवमंदिर, (6) जोडा शिवालय, (7) प्राचीन मीना बाजार, (8) प्राचीन महाराजा पुस्तकालय, (9) बेतियाराज की महल एवं डयूढ़ी, (10) ऐतिहासिक हजारीमल धर्मशाला, (11) शहीर स्मारक, (12) कैथोलिक चर्च, (13) मस्जिद, (14) गुरूद्वारा इत्यादि।

14. सरेयामन/उदयगिरी जंगलः– बेतिया शहर से लगभग 15 किमी द0 में स्थित सरेयामन एवं उदयगिरी जंगल प्रवासी पक्षियों एवं अन्य जंगली जीवों की उपस्थिति के कारण पर्यटकों के लिए खास आकर्षण का केंद्र है। पर्यटक यहाँ सरेयामन में बोटिंग, स्नान इत्यादि का लाभ उठाते हैं। साथ ही यहाँ निर्मित पर्यटक आवास स्थल एवं प्रशासन द्वारा प्रदत्त खुली गाड़ियों से

भ्रमण करते हैं। सरेयामन का पानी स्वास्थ्यवर्धक है क्योंकि इसके किनारे लगे जामुन के पेड़ का फल जल को कसैलापन प्रदान करता है जो मधुमेह रोगियों के लिए लाभदायक है। वहीं इस जल में उत्पादित होने वाली 'रोहू मछली' की मांग बाजार में काफी ऊँची है। **प0 चम्पारण जिला में पर्यटन उद्योग की समस्याएँः–**

1- जिले में राष्ट्रीय एवं राज्यीय स्तर के परिवहन मार्गों की बदतर दशा तथा सड़क एवं रेल परिचालन में समय श्रम एवं पूँजी की अधिक लागत।

2- प0 चम्पारण जिला राज्यजीय एवं अंतराष्ट्रीय सीमा पर स्थिति होने के कारण बाद भी पर्यटन एवं परिवहन की आधारभूत आवश्यकताओं की कमी ने पर्यटकों का ध्यान ज्यादा आर्कषित नहीं किया है।

3- उच्चस्तरीय आवासीय असुविधाओं, पर्यटक केंद्रों से आवासीय दूरी इत्यादि के कारण समय–श्रम और व्यय की अधिकता है।

4- सुरक्षा का अभाव होने से आगंतुक पर्यटकों के अपहरण, शोषण, बलात्कार, छेड़खानी इत्यादि जैसे घटनाएँ पर्यटकों का आकर्षण कम करती है। जिसका दुष्प्रभाव पर्यटन पर पड़ रहा है।

5- यहाँ टूर एवं ट्रेवल ऑपरेटर का अभाव पाया जाता है जबकि भौगोलिक पर्यटन एवं राजनैतिक दृष्टिकोण से प0 चम्पारण जिला का महत्वपूर्ण स्थान हैं। अतः यहाँ ट्रेवल एजेन्ट एवं दूर ऑपरेटर की आवश्यकता है।

6- प0 चम्पारण का जिला मुख्यालय बेतिया है जहाँ पर्यटकों के ठहरने की निम्न/मध्यम स्तरीय व्यवस्था अच्छी कहीं जा सकती है। परंतु शहर की परिवहन अव्यवस्था, प्रदूषण, जलजमाव इत्यादि की स्थिति पर्यटकों का ध्यान आकर्षित करने में असक्षम रहीं है।

प0 चम्पारण जिला में पर्यटन उद्योग की समस्याओं से संबंधी समाधान एवं उपाय

1- प0 चम्पारण जिला में पर्यटकों के आवासीय सुविधा के लिए सरकारी एवं निजी संस्थाओं द्वारा प्रत्येक स्तर की होटल, लॉज, अतिथिशाला इत्यादि का निर्माण विभिन्न पर्यटक स्थलों के आस–पास हो ताकि पर्यटकों को परिवहन में अधिक समय श्रम एवं पैसा व्यय न हो।

2- पर्यटक स्थल से संबंधित जानकारी प्रदान करने के लिए कौशल पूर्ण एवं द्विभाषी गाइडो की व्यवस्था करनी चाहिए। स्वदेशी भाषा के साथ एक विदेशी भाषा की पारगतंता अनिवार्य हों।

3- पर्यटकों की सुरक्षा हेतु पर्यटन विभाग एवं सरकार द्वारा पर्यटन बल की व्यवस्था तथा स्थानीय निवासियों में 'अतिथिदेवोभव' की भावना का विकास किया जाना चाहिए।

4- सभी पर्यटकों स्थलों को परस्पर जोड़ने के लिए टूर एवं ट्रेवल एजेंट, ऑपरेटर, पर्यटन सूचना केंद्र, दूरदर्शन, समाचार–पत्र एवं पत्रिकाएँ तथा अन्य सुविधाएँ उपलब्ध करानी चाहिए इससे पर्यटकों की संख्या में वृद्धि होगी।

5- घरेलू पर्यटन को विशेष रूप से प्रोत्साहित करना

6- स्थानीय एवं राज्य स्तर पर पर्यटन को एक उद्योग के रूप में विकसित करने के लिए जन–जागरूकता का प्रचार–प्रसार करना।

7- पर्यटकों स्थलों पर आवश्यक साफ–सफाई का ध्यान तथा उसकी खूबसूरती बनाए रखने के लिए अधिक भीड़–भाड़, अतिक्रमण करनेवाली दुकानों को दूर रखना। साथ ही प्रदूषण मुक्त अभियानों का प्रचार–प्रसार करना।

8- देश की सभ्यता, संस्कृति, विरासत पर आधारित समेकित पर्यटक सर्किटों का निर्माण एवं विकास करना। इसके तहत प्रशासनिक एवं निजी एजेंसियों का सहयोग लेना।

निष्कर्षः प0 चम्पारण जिला भौगोलिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक दृष्टिकोण से पर्यटन के लिए एक महत्त्वपूर्ण धरोहर है। उपरोक्त वर्णित योजनाओं एवं समस्या समाधानों को अपनाकर प0 चम्पारण जिला में पर्यटन को बढ़ावा दिया जा सकता है। प0 चम्पारण जिला में पर्यटन विकास संबंधी कार्य नगन्य हैं। प्रशासनिक एवं स्थानीय जागरूकता के माध्यम से यहाँ पर्यटन उद्योग के लिए सुन्दर एवं सस्ती आवास सुविधा, परिवहन व्यवस्था, सुरूचिपूर्ण भोजन तथा दर्शनीय स्थलों का विकास, स्वास्थ्य एवं पर्यावरण संबंधी विकास का पर्यटन उद्योग को तीव्रगति दी जा सकती है। अतः इसके लिए आवश्यक है कि पर्यटक स्थलों एवं पर्यटकों की सुविधाओं के लिए एक सुदृढ़ एवं सुनियोजित तरिके से विकास किया जा सकें। **सम्भावनाएँः**

1- पर्यटक स्थलों का विकास।

2- यातायात के साधन एवं मार्गों का विकास।

3- रोजगार के साधनों का विकास। गाइड, होटल व्यवसाय, स्थानीय बाजार का विकास, हस्तशिल्प, काष्ट शिल्प का विकास

4- कृषि एवं उद्योग पर जनसंख्या भार में कमी।

5- सांस्कृतिक विकास।

6- आय में वृद्धि।

संदर्भ–सूचीः

1- सहाय, शिवस्वरूप : पर्यटक सिद्धांत और प्रबंधन तथा भारत में पर्यटन, प्रकाशन, श्री नरेन्द्र प्रकाश जैन, मोतीलाल बनारसीदास, बंगलो रोड, दिल्ली।

2- मोहन, सविता : उत्तराखण्ड समग्र अध्ययन तक्षशिला प्रकाशन 98 ए, हिन्दी पार्क दलिगंज, नई दिल्ली।

3- कुमार संतोष : बिहार का भूगोल, प्रकाशन स्टूडेण्ड बुक सेन्टर, पटना।

4- कुमार संजीव : पर्यटक (बिहार विशेष) प्रकाशन विश्व संवाद केन्द्र, फ्रेजर रोड, पटना

5- सौरभ, सच्चिदानन्द : चम्पारण का स्वर्णिम इतिहास, प्रकाशन सुरभी, वाल्मीकि नगर, प0 चम्पारण (बिहार)

6- 'नेपाली, बम्बहादुर सिंह : चंपारण का इतिहास, प्रकाशन सिन्हा इन्टर प्राइजेज, कदमकुआँ, पटना।

7- सिंह, वाई0के0 : चम्पारण दर्शन, प्रकाशन पुस्तकसंसार, पटना।

8- पर्यटक आंकड़ा (2012–16)ˇमेज बेंउचंतंद थ्वतमेज क्मचंतजउमदज (2016)

9- पर्यटक आंकड़ा (2015–16) वाल्मीकि बिहार कार्यालय, वाल्मीकि नगर, पं0 चम्पारण।

10- निम्नलिखित बेवसाइट से भी सूचनाएँ एकत्रित की गई।

11. www.gov.bih.nic.in

12. www.westchamparan.bin.nic.in